f'k{kk dh tkx:drk d; }kjk lkekftd fu;U=.k

Amit Panwar
Dept. of Sociology, J.V.Jain College, Saharanpur, UP, India

lkekftd fu;U=.k

समाजिक नियन्त्रण के द्वारा व्यक्तियों के व्यवहारों को समाज के स्थापित प्रतिमानों के अनुरूप ढालने का प्रयत्न किया जाता है। इस प्रकार सामाजिक नियन्त्रण वह विधि है जिसके द्वारा एक समाज अपने सदस्यों के व्यवहारों का नियमन करता है। सामाजिक नियन्त्रण के द्वारा एक समाज अपने सदस्यों को उनकी निर्धारित भूमिकाएं निभाने, नियमों का पाल करने एवं व्यवस्था बनाये रखने के लिए प्रेरित करता है। प्रत्येक समाज अपने सदस्यों से यह अपेक्षा करता है कि वे एक निर्धारित तरीके से समाज में आचरण करें, उचित रूप से अपनी भूमिकाओं एवं कर्तव्यों का निर्वाह करें अन्यथा समाज में व्यवस्था बनाये रखना एवं लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना कठिन हो जायेगा। प्रत्येक समाज अपने सदस्यों से यह अपेक्षा करता है कि वे उसकी संस्कृति के अनुरूप व्यवहार–प्रतिमानों, प्रथाओं, रीति–रिवाजों, मूल्यों, आदर्शों एवं कानूनों के अनुरूप आचरण कर समाज को स्थायित्व एवं व्यवस्था प्रदान करें। इसलिए वह अपने सदस्यों पर कुछ नियन्त्रण लगाता है। इसी प्रकार समाज में जब नयी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं तब भी समाज अपने सदस्यों के व्यवहारों पर अंकुश रखता है जिससें कि नयी परिस्थितियों से प्रभावित होकर लोग सामाजिक ढांचे को तोड़ न दें। सामाजिक नियन्त्रण एक अन्य दृष्टि से भी आवश्यक है– मानव अपनी प्रकृति से स्वार्थी, व्यक्तिवादी, अराजक, लडाकू, हिंसक एवं संघर्षकारी है। यदि उसकी इन प्रवृत्तियों पर अंकुश नहीं रखा जाय और उसे पूरी तरह स्वच्छन्द छोड़ दिया जाय तो समाज युद्ध–स्थल बन जायेगा व मानव का जीना कठिन हो जायेगा। इस क्लेषकारी, अराजक एवं अव्यवस्थित स्थिति से बचने के लिए ही प्रत्येक समाज नियन्त्रण की व्यवस्था करता है, नियमों एवं कानूनों का निर्माण करता है व आवश्यकतानुसार बल प्रयोग करता है। सामाजिक नियन्त्रण के अभाव में मानवीय सम्बन्धों की व्यवस्था एवं सम्पूर्ण मानव जीवन ही अस्त–व्यस्त हो जायेगा। डेविस ने उचित ही लिखा है कि समाज का निर्माण ही 'सामाजिक सम्बन्धों' एवं 'नियन्त्रण की व्यवस्था' द्वारा होता है, एक की अनुपस्थिति में दूसरे का अस्तित्व कदापि सुरक्षित नहीं है। समाजिक नियन्त्रण के द्वारा ही समाज में सन्तुलन, दृढता, एवं एकरूपता कायम की जाती है। इसके अभाव में सामाजिक मूल्य एवं आदर्श चकनाचूर हो जायेंगे एवं सामाजिक प्रगति सम्भव नहीं हो सकेगी।

lkekftd fu;U=.k dk vFk %&

सामाजिक नियन्त्रण का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया जाता रहा है। एक सामान्य धारणा यह है कि लोगों को समूह द्वारा स्वीकृत नियमों के अनुसार आचरण करने के लिए बाध्य करना ही सामाजिक नियन्त्रण है, किन्तु यह एक संकुचित धारणा है। प्रारम्भ में सामाजिक नियन्त्रण का अर्थ केवल दूसरे समूहों से अपने समूह की रक्षा करना और मुखिया के आदेशों का पालन करना मात्र था। बाद में धार्मिक और नैतिक नियमों के अनुसार व्यवहार करने को सामाजिक नियन्त्रण से लिया जाता है जिसका उद्देश्य सामाजिक आदर्शों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करना है।

1 सामाजिक नियन्त्रण में व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है वह सामाजिक प्रतिमानों के अनुरूप आचरण करे।
2 सामाजिक नियन्त्रण समाज में संगठन एवं एकरूपता पैदा करता है।
3 सामाजिक नियन्त्रण तीन स्तरों पर होता है– समूहों का समूह पर नियन्त्रण, समूह का व्यक्तियों पर नियन्त्रण तथा व्यक्तियों का व्यक्तियों पर नियन्त्रण।
4 सामाजिक नियन्त्रण से सामाजिक सम्बन्धों में स्थिरता एवं एकरूपता आती है।
5 सामाजिक नियन्त्रण से तनाव एवं संघर्षों को कम तथा सहयोग स्थापित किया जाता है।
6 सामाजिक नियन्त्रण उन साधनों एवं विधियों की ओर संकेत करता है जिनके द्वारा व्यक्तियों के व्यवहारों को एक आवश्यक सांचे में ढाला जाता है।
7 सामाजिक नियन्त्रण द्वारा विपथगामी प्रवृत्तियों पर अंकुश रखा जाता तथा उन्हें कुचल दिया जाता है।
8 सामाजिक नियन्त्रण के लिए दण्ड एवं पुरस्कार दोनों विधियों का प्रयोग किया जाता है।

शिक्षा एक ऐसी संस्था है जिसका उद्देश्य बालक में मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं भौतिक गुणों का विकास करना है जिससे कि वह अपने सम्पूर्ण पर्यावरण के साथ सफल अनुकूलन कर सकें। आधुनिक समाजों में औद्योगीकरण के कारण शिक्षा के स्वरूपों में भिन्नता आयी है। अब शिक्षा सार्वभौमिक बन गयी है और सभी जातियों एवं वर्गों के लिए उपलब्ध है। शिक्षा देने का कार्य औपचारिक रूप से षिक्षण संस्थाओं द्वारा किया जाने लगा है। शिक्षा में विशेषीकरण की प्रवृत्ति पनपी है। आज चिकित्सा, कानून, व्यापार एवं वणिज्य, विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान, आदि की शिक्षा देने वाली विभिन्न संस्थाएं है। शिक्षा में धर्म एवं नौतिकता का प्रभाव कम हुआ है और शिक्षा धर्मनिरपेक्ष हो गयी है। आज शिक्षा वैयक्तिक के स्थान पर समूहवादी हो गयी है। लिखित रूप में शिक्षा–कार्य अधिक किया जाने लगा है। स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षण संस्थाएं शिक्षा प्रदान करने का कार्य करती हैं। बोटोमोर कहते हैं कि आदिम एवं पूर्वकालीन समाजों में शिक्षा का विषय अधिकांशत– रहन–सहन के तरीकों तक ही सीमित था जबकि आधुनिक समाजों में शिक्षा का विषय साहित्यिकि कम और वैज्ञानिक अधिक है। प्राचीन समाजों में शिक्षा का तात्पर्य संगृहीत ज्ञान को हस्तान्तरित करने से था जबकि आधुनिक शिक्षा वैज्ञानिक ज्ञान में परिवर्तन में भी रूचि रखती है।

f'k{k.k tkx:drk l; lkekftd fu;U=.k %&

शिक्षा के विभिन्न प्रकार्यों में से एक महत्वपूर्ण प्रकार्य समाज में नियन्त्रण बनाए रखना भी है। सामाजिक नियन्त्रण के अन्य साधन व्यक्ति के प्रति कठोरता बरत सकते है, दण्ड, दबाव एवं बदले की भावना से काम ले सकते हैं किन्तु शिक्षा व्यक्ति में तर्क एवं विवेक पैदा करती है, उसमें आत्म–नियन्त्रण की शक्ति पैदा करती है जिससे कि वह स्वयं ही उचित एवं अनुचित को ध्यान में रखकर सामाजिक नियमों, प्रतिमानों एवं कानूनों का पालन करता है। शिक्षा निम्नांकित रूपों में सामाजिक नियन्त्रण बनाए रखने का कार्य करती है:

1. lkekthdj.k&

सामाजीकरण का तात्पर्य व्यक्ति को अपनी संस्कृति एवं समाज का ज्ञान प्रदान कर उसे समाज की एक प्रकार्यात्मक इकाई बनाना है। समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास एवं निर्माण होता है। विघटित व्यक्तित्व से समाज के अनुरूप आचरण की अपेक्षा नहीं की जा सकती। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को समाज के मूल्यों, मानदण्डों, नियमों, कानूनों, आदर्शों का ज्ञान कराया जाता है। समाज द्वारा निर्धारित एवं स्वीकृत नियमों का पालन करने से समाज में नियन्त्रण, एकता एवं समरूपता बनी रहती है।

2. ckf)d fodkl&

शिक्षा का एक प्रमुख कार्य मानव ज्ञान एवं बुद्धि का विकास करना है। आज की षिक्षा तर्क एवं विज्ञान पर आधारित है। वह मानव मस्तिष्क का विकास करती है, ज्ञान के द्वार खोलती है, मनुष्य को चिन्तनशील बनाती है। बुद्धिमान एवं ज्ञानवान व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह उचित और अनुचित में भेद करे और समाज–सम्मत व्यवहार करे। शिक्षा व्यक्ति में सदगुणों का विकास करती है। ज्ञान सामाजिक प्रगति एवं नियन्त्रण दोनों ही के लिए आवश्यक है।

3. ufrd xq.kksa dk fodkl&

शिक्षा मानव में नैतिक गुणों जैसेः– सहयोग, सहिश्णुता, दया, ईमानदारी, आदि का विकास करती है। शिक्षा का एक कार्य चरित्र–निर्माण भी है। सद्गुणों एवं सद्चरित्र कें अभाव में मानव में पशु–प्रवृत्तियां बलवती हो जाती हैं। ऐसी दशा में व्यक्ति पर नियन्त्रण रखना समाज के सामने एक समस्या बन जाती है। नैतिक गुणों से युक्त व्यक्ति ही निष्ठावान एवं कर्तव्य–परायण होता है। ऐसे व्यक्ति ही समाज में व्यवस्था, एकता एवं संगठन बनाए रखने में योग देते हैं। इस प्रकार शिक्षा मानव में नैतिक गुणों का विकास एवं चरित्र का निर्माण कर सामाजिक नियन्त्रण बनाए रखने में योग देती है।

4. lLdfr dk gLrkUrj.k&

शिक्षा का एक प्रमुख कार्य मानव संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरण करना है। इसके अभाव में मानव संस्कृति कभी भी समृद्ध और प्रगतिशील नहीं हो पाती। पूर्वजों द्वारा अर्जित ज्ञान, अनुभव और विज्ञान को संस्कृतिक परम्परा के रूप में संजोया जाता है। आदर्शों, मूल्यों, प्रथाओं, एवं लोकाचारों के रूप में सांस्कृतिक विरासत को शिक्षा द्वारा ही आने वाली पीढ़ियों को हस्तान्तरित किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति समाज का क्रियाशील सदस्य बनने के लिए अपनी संस्कृति को सीखता है,

उसे आत्मसात करता है। सांस्कृति परम्परा, मूल्यों एवं आदर्शों के अनुरूप आचरण कर वह समाज व्यवसाी को बनाए रखने में योग देता है।

5. lkekftd vuqdqyu e lg;kx&

शिक्षा का कार्य व्यक्ति को परिस्थितियों के साथ अनुकूलन करने में सहयोग प्रदान करना है। मनुष्य को अपने जीवनकाल में अनेक नवीन परिस्थितियों एवं संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में विजयी वही होता है जो सफलतापूर्वक परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढाल ले या परिस्थितियों को अपने अनुरूप बना ले। ऐसा करने में शिक्षा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दुर्खीम का मत है कि शिक्षा बच्चों को भाषण, धर्म, नैतिकता तथा सामाजिक प्रथाओं के माध्यम से सामान्य सामाजिक पराम्पराओं का प्रसारण कर, सम्पूर्ण समाज में जीवन बिताने योग्य बनाती है।" इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति को समाज एवं परिस्थितियों के अनुरूप बनाकर सामाजिक विघटन रोकती है और नियन्त्रण बनाए रखने में योग देती है।

6. ekuo dk lH; o l|lLd`r cuku e ;kx&

शिक्षा का एक कार्य मानव को सभ्य एवं सुसंस्कृत प्राणी बनाना है। शिक्षा ही मानव को पशु–स्तर से ऊचां उठाकर श्रेष्ठ मानव बनाती है। असभ्य व्यक्ति पशु के समान है, वह उचित अनुचित में भेद नहीं कर सकता। असभ्य एवं जंगली लोगों का समाज प्रगति नहीं कर सकता, वहां कोई न्यायशील एवं समुचित व्यवस्था कायम नहीं हो सकती है, वरन् जंगल का कानून 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' प्रचलित होता है। ऐसा समाज नियन्त्रण–विहीन एवं अराजक होता है। स्पष्ट है कि शिक्षा ही मानव को सभ्य बनाकर उसे नियन्त्रित जीवन व्यतीत करने में सहयोग देती है।

7. vkfFkd thou dk lj{k.k inku&

शिक्षा मानव को आर्थिक संरक्षण भी प्रदान करती है। वर्तमान शिक्षा को अधिकाधिक व्यवसायोन्मुख बनाया जा रहा है। आज 'ज्ञान केवल ज्ञान के लिए' को ही पर्याप्त नहीं माना जाता। अब तो शिक्षा व्यक्ति को आर्थिक ज्ञान एवं प्रशिक्षण देकर अपना तथा अपने आश्रितों का भरण–पोषण करने योग्य बनाती है।

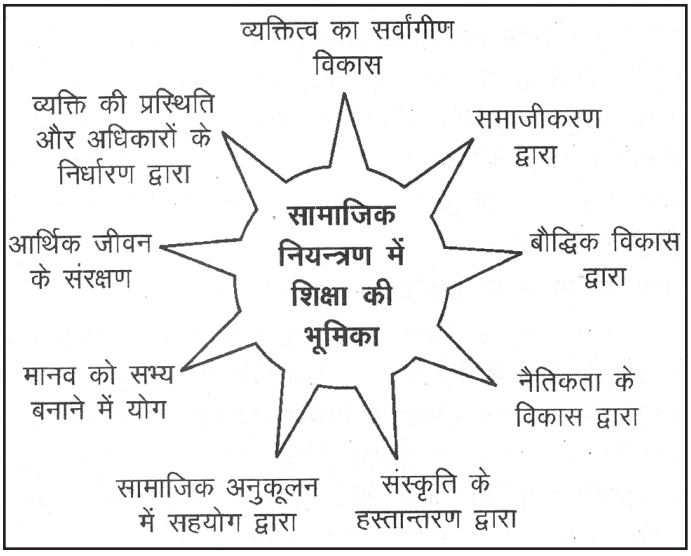

आज शिक्षा को अपूर्ण माना जाता है जो व्यक्ति को रोजी–रोटी कमाने के लिए तैयार नहीं करती। आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त समाज विघटित होने लगता है और उसमें नियन्त्रण बनाए रखना एक कठिन समस्या हो जाती है। स्पश्ट है कि शिक्षा व्यक्ति को आर्थिक संरक्षण प्रदान कर सामाजिक नियन्त्रण बनाए रखने में महत्वपूर्ण योग देती है।

8. O;fDrRo dh ÁfLFkfr vkj vf/kdkjk d fu/kkj.k e lgk;d&

शिक्षा ज्ञान और कुशलता में वृद्धि करती है जो आधुनिकीकरण में सहायक है। शिक्षा प्राप्त करके ही एक व्यक्ति ड़ॉक्टर, इंजीनियर, न्यायाधीश, वकील, भारतीय पुलिस एवं प्रशासनिक सेवा में उच्च अधिकारी, प्रबन्धक, आदि बन सकता है। शिक्षा प्राप्त कर उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों को प्रस्थिति के साथ–साथ कई अधिकार भी मिल जाते हैं। शिक्षित व्यक्ति सामाजिक नियन्त्रण बनाये रखने में विशेष योग दे पाते हैं।

9. O;fDrRo d lokxh.k fodkl e lgk;d&

शिक्षा व्यक्तित्व के विकास में अपूर्व योग देती हैं। प्राणिशास्त्रीय इकाई के अतिरिक्त व्यक्ति जो कुछ भी है, वह सब कुछ समाजीकरण का ही परिणाम है और समाजीकरण में शिक्षा, चाहे वह औपचारिक हो या अनौपचारिक, महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जहां व्यक्तियों के व्यक्तित्वों का सर्वांगीण विकास हो जाता है, वहां वे मान्य व्यवहार प्रतिमानों को ध्यान में रखते हुए कार्य करते हैं। परिणामस्वरूप सामाजिक नियन्त्रण बना रहता है।

ukV%&

इस प्रकार व्यापक अर्थ में शिक्षा बचपन से लेकर प्रौढ़ावस्था तक सामाजिक नियन्त्रण का एक महत्वपूर्ण साधन है। आधुनिक समाजों में जहां कि औपचारिक शिक्षा महत्वपूर्ण बन गयी है और जहां कि शिक्षकों का एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक समूह बन गया है, शिक्षा सामाजिक नियन्त्रण का एक प्रमुख साधन बन गयी हैं। शिक्षा व्यक्तित्व में अनुशासन एवं आत्म–नियन्त्रण के भाव पैदा करती है जिस समाज मे समुचित शिक्षा पद्धति के प्रति जागरूकता की कमी पायी जाती है वहाँ पर सामाजिक नियन्त्रण का भी अभाव पाया जाता है। आजकल के सभ्य सामज के लिये सामाजिक नियन्त्रण का होना अति आवश्यक है। लेकिन बिना शिक्षा प्रणाली के प्रति जागरूकत होकर सामाजिक नियन्त्रण होना मुश्किल है।